International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
www.hindijournal.com
Volume 1; Issue 1; November 2015; Page No. 01-02

महादेवी वर्मा के साहित्य में वेदना और ममता की प्रधानता का चिंतन

राजेन्द्र प्रसाद तिवारीए भगत सिंह

भूगोल विभाग, हे0 न0 ब0 ग0 वि0 वि0 श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड

सारांश

महादेवी वर्मा का ह्रदय एक माँ का ह्रदय था। जिसमें समस्त मानव जाति की वेदना समाई हुई थी। उनके द्वारा उकेरे गए चित्र उनमें विद्यमान मानवीयता तथा ममत्व की भावना को दर्शाते है। उनके पात्र साधारण समाज के पात्र हैं जो कि समाज में उपेक्षित और पीड़ीत है। महादेवी ने उनकी पीड़ा को समझा है ओर समाज के सामने प्रस्तुत किया है। महादेवी जी के अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं, श्रृंखला की कड़ियाँ तथा मेरा परिवार उनकी इन्हीं भवनाओं के प्रतिबंब है।

कूट शब्द– ममतत्व, वेदना, वात्सल्य

प्रस्तावना

सजल गीतों कर गायिका महोदेवी वर्मा आधुनिक युग की मीरा कही जाती है। इनकी कविता, संगीत–कला, चित्र कला तथा काव्य–कला का अपूर्व समन्वय है। हिंदी साहित्य की कवियित्रियों में तो देवी जी कस स्थान सर्वश्रेष्ठ है ही, साथ ही इसमें आधुनिक रहस्यवाद तथा छायावाद की सभी प्रमुख प्रवृतियाँ अत्यंत सुदर तथा उभरते हुए रुप में मिलती है। उनके साहित्य में पीड़ा, आँसू, माधुर्य, आनन्द तथा उल्लास सभी कुछ है। इनकी कविताओं में पीड़ा के तत्त्व की प्रधानता को देखकर कुछ आलोचकों ने इन्हें पीड़ावाद की कवियित्री कहा है। महादेवी के अपने ही शब्दों में–दुःख मेंरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संासार को एक सुत्र में बाँध रखने की क्षमता रखता है। हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी न पहुँचा सके, किन्तु हमारा एक बूँद भी जीवन को उर्वर बनाए बिना नहीं गिर सकता विश्व जीवन में अपने जीवन को, विश्व वेदना में अपनी वेदना को इस प्रकार मिला वेदना जिस प्रकार से एक–एक पल जल बिन्दु समुद्र में मिल जाता है, कवि का मोक्ष है। इसी प्रसंग में वे आगे चल कर कहती है– मुझे दुःख के दोनो ही रुप प्रिय है, एक वह जो मनुष्य के संवेदनशील ह्रदय को सारे संसार से एक आविच्छन्न बन्धन में पड़े असीम चेतना का क्रन्दन है। महादेवी जी की विशेषता यह है कि छायावाद ने व्यक्ति और समाज की जिस व्यपक असन्तोष भवना को अभिव्यक्ति दी, उसमें उन्होंने भरतीय नारी के असंतोष, निराशा और आकांक्षा का स्वर भी जोड़ दिया।

स्मृति की रेखाएं ओर अतीत कके चलचित्र में निरंतर जिज्ञासाशील महादेवी ने स्मृति की आधार पर अमिट रेखाओं द्वारा अत्यंत सह्रदयपूर्वक जीवन के विविध रुपों को चित्रित कर उन पात्रों को अमर कर दिया है। इनमें गाँव, गँवई के निर्धन, विपन्न लोग, बालविधवाओं, विमाताओं, पुनर्विवाहितों तथा कथित भ्रष्टाओं और वृद्ध–विवाहके कारण प्रताडित्रताओं के अत्संत सश्क्त एवं करुण चित्र है। केवल नारियाँ ही नहीं पुरुष वर्ग काभी महादेवी वर्मा ने सही चित्रण किया है। रामा, घीसा अलोपी और बदलू आदि के रेखचित्र उनके असाधारण मानवतावाद की ओर इंगित करते है। महादेवी ने अधिकांश अपनी रेखाचित्रों में निम्नवर्गीय पात्रों की विशेषता दुर्बलताओं और समस्याओं का चित्रण किया है। सेवक रामा की वात्सल्यपूर्ण सेवा, भंगीन सबिया की पति–परायणता और सहनशीलता घीसा की निस्छल गुरुभक्ति, साग–भजी के विक्रेता अंधे अलोपी का सरल व्यक्तित्त्व, कुंभकार बदलु तथा राधिवा का सरल दांपत्य प्रेम, पहाड़ की रमणी लक्षमा का महादेवी के प्रति अनुपम स्नेह–भव, वृद्ध भकित्त्न की प्रगल्भता तथा स्वामी–भक्ति, चीनी युवक की करुण– मार्मिक जीवन–गाथा, पवित्य कूली जंगबहादुर तथा उसके अनुज धनिया की कर्मठ्ता आदि अनेक विषयों को रेखाचित्रों में स्थान दिया है। सभी स्मृतिचित्रों को महादेवी ने अपने जीवन के भीतर से प्रस्तुत किया है। अतः यह स्वाभविक ही है। इनमें अनेक अपने अनुभुतियों को ज्यों का त्यों यर्थाथ रुप में अंकित किया है। यहां यह कहा जा सकता है कि ममहादेवी के रेखाचित्रों में चरित्र–चित्रण का तत्व प्रमुख रहा है, कथानक उसका अंगीभूत होकर प्रकट हुआ है। उनके इन रेखाचित्रों में गंभीर लोक का भी पर्याप्त समावेश हुआ है।

पंथ के साथी में महादेवी ने अपने समकालीन रचनाकारों का चित्रण किया है। जिस सम्मान और आत्मीयतापूर्ण ढंग से उन्होंने

इन साहित्यकारो का जीवन–दर्शन और स्वभावगत महानता को स्थापित किया है वह अपने आप में बड़ी उपलब्धि है। पथ के साथी में संस्मरण भी है। और महादेवी द्वारा पढे गए कवियों के जीवन का पृष्ठ भी भी। उन्होंने एक ओर साहित्यकारों की निकटता, आत्मीयता और प्रभाव का काव्यात्मक उल्लेख किया है और दुसरी ओर उनके समग्र जीवन दर्यन को परखने का प्रयत्न किया है। पथ के साथी में कवींद्र रवींद्र दद्दा, प्रसाद, निराला पंत, सुभद्राकुमारी चौहान तथा सियारा–मशरण गुप्त की रेखाएं 'ाब्द–चित्र के रुप में आई है। श्रृंखला की कड़ियां में सामाजिक समस्याओं विशेषकर अभिष्प्त नारी जीवन के जलते प्रशनों के सबंधों में लिखे उनके विचारात्मक निबंध संकलित है। महादेवी वर्मा का पशु–प्रेम जग–जाहिर है उनमें पशु के प्रति अगाध प्रेम था। मेरा परिवार सस्मरणों के अभिन्न अंग बने कुछ पशु–पक्षियों के रेखाचित्र उभरे है। जिसमें नीलकंठ (मोर), गिल्लू (गिलहरी), सोना (हिरणी), दुर्मुख (खरगोश), गौरा (गाय), नीलू (कुत्ते), और निक्की (नेवले), रोजी (कुत्तिया) तथा रानी घोड़ा नामक सात रेखाचित्र है।

मेरा परिवार का सबसे पहले नीलकंठ (मोर) को महादेवी जी द्वारा नखासकोने से खरीदे जाने से लेकर उसके धीरे धीरे बढ़ने ओर महादेवी जी के पशु–पक्षियों के परिवार में सम्मिलित होने की कहानी है। राधा नामक मोरनी के साथ इस नीलकंठ (मोर) के नृत्य, वर्षा ऋतु के उल्लास, बसंत ऋतु के उद्दीपन आदि चित्र प्रस्तुत किया गया है।

इस संग्रह का दुसरा पशु पात्र गिल्लू (गिलहरी) के जन्म से लेकर उसके बड़े होने ओर महादेवी के उपर सिर से पैर तक चढ़ने–उतरने तथा महादेवी जी के अनुपास्थिति में कुछ भी न खाने–पीने और अंत में उनकी अंगुली से चिपक कर करुणान्त हो जाने की घटनाएं है।

मेरा परिवार का तीसरा पात्र सोना नामक हिरणी की बाल्यवस्था से लेकर उसके उछलने–कुदने, दूध पीने, घंटी बजाने पर प्रार्थना के मैदान पहूँचने और स्नेहवशत महादेवी जी को छलांग कर निकल जाने की घटनाओं को समाविष्ट किए हुए संग्रह का चौथा मानवेतर पात्र दुर्मुख खरगोश के महादेवी के पशु–पक्षी परिवार में मानवेतर पात्र दुर्मुख खरगोश के महादेवी के पशु–पक्षी परिवार में सम्मिलित होने पर आकारण क्रोधी स्वाभावी के कारण महादेवी द्वारा दुर्वासा नाम रखने उसके प्रियदर्शन व्यक्तित्व, मिट्टी खोदकर सुरंग बनाने, कबूतर मोर आदि पर झपटने का उल्लेख है। बाद में महादेवी द्वारा 'हिमानी' नामक खरगोश–वधू को साथ रहने की व्यवस्था करने और इस क्रोधी दुर्मुख द्वारा हिमानी के बच्चों को घायल करने अैर अंत में एक साँप के बच्चे द्वारा काटे जाने पर मारे जाने की घटनाएँ है।

संग्रह का पाँचवा प्राणी पात्र 'गौरा' गाय के बहिरंग व्यक्तित्व से प्रारंभ करके उसके महादेवी जी के यहाँ पहूँचने पर स्वागत करने से लेकर उसके प्रियदर्शन स्वरुप, मन्थर गति के सौर्न्दय, महादेवी के पशु–पक्षी परिवार में एकदम हिल–मिल जाने के स्वाभव, मानवीय स्नेह के समान आकुलता, लालमणी नामक एक बछड़े को जन्म देने और दो–तीन मार के उपरान्त उसके निरंतर दुबले हाते चले जाने तथा गौरा के करुणान्त हो जाने की घटनाएं है। छठवाँ पात्र 'नीलु' कुत्ते की कथा से जुड़ी है भुतिये बाप और अल्सेशियन माँ के कारण वर्णसंकर नीलू के धूपछाँटी रंग तथा बल और स्वाभव में भी वैशिष्ट्य होने के कारण आलभ्यद–र्पयुक्त व्यक्त्तिव की प्रसंसा है।

'मेरा परिवार' का अंतिम तथा सातवें संस्मरण में निक्की (नेवले), रोजी (कुतिया) ओर रानी (घोड़ी) की कहानी में उस अदभुत मैत्री का परिचय दिया गया है, जो इन पशुओं में परस्पर विद्यमान थी। यह संस्मरण उस समय की कहानी कहता है, जब महादेवी जी बालिका थी और उनके पिताजी के परिवार में ये तीनों पशु रहा करते थे।

'महादेवी की गद्‌य कृतियाँ' नामक लेख में रामचंद्र तिवारी जी प्रस्तुत पुस्तक के विषयवस्तु की चर्चा करतेद हुए लिखते है। 'मेरा परिवार' में समृति सन्दर्भो के सहारे जिनकी कथाअंकित की गई है वे है– नीलकंठ (मोर), गिल्लू (गिलहरी), सोना (हिरणी), दुर्मुख (खरगोश), गौरा (गाय), नीलू (कुत्ते), और निक्की (नेवले), रोजी (कुत्तिया) तथा रानी (घोड़ी) इस सभी प्रणियों की जीवन कथा भी मर्मस्पार्शिनी करुण कथा ही है। महादेवी की सहानुभूति और करुण नामक जगत कथा ही है। महादेवी की सहानुभूति और करुण मानव जगत तक ही सीमित न रहकर पशु–पक्षियों तक प्रसारित है। उन्होंने पशु–पक्षियों को भी माँ की ममता दी है। उन्हें पाला है। बड़ा किया है। बीमारी में दबा की है। उनके हर्ष में पुलकित हुई है और दुःख में वयथित। उनके वियोग में उदास हुई है और संयोग में उल्लासित। ये पशु–पक्षी उनके जीवन सहचर ही नहीं उनके परिवार कें अंग बन गये है। 'मेरा परिवार' हिंदी साहित्य में ऐसी अकेली कृति है जिसमें मानवीय करुणा की स्निगधता और शीतलता ने पशुओं को भी व्यक्त्वि प्रदान किया है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. डॉ राजकुमार सिंह–विचार विमर्श –कवियित्री महादेवी वर्मा–सागर प्रकाशन पृ. 47–48
2. दीपाशीखा (एच टी एम एल) पुस्तक डॉट आर्ग
3. भारतीय चिंतन परंपरा और सप्तपर्णा (एच टी एम एल) ताप्तीलोक, अभिगमन तिथिः2007
4. महादेवी वर्मा : महादेवी एक दृष्टी में, नई दिल्लीः राधाकृष्ण प्रकाशन पृ. 113,114